सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

राजा वीरेंद्र सिंह की अद्भुत सूझ-बूझ

बहुत समय पहले की बात है. सूर्यनगर नाम का एक सुंदर राज्य था. वहाँ के राजा वीरेंद्र सिंह अपनी बहादुरी से अधिक अपनी बुद्धिमानी और न्यायप्रिय स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे. वे हमेशा कहते थे, 'तलवार से जीती हुई लड़ाई कुछ समय की होती है, लेकिन बुद्धि से जीता हुआ विश्वास हमेशा के लिए रहता है.'

एक दिन पड़ोसी राज्य का एक व्यापारी राजा के दरबार में पहुँचा. उसके साथ एक भारी संदूक था. व्यापारी ने राजा से कहा, 'महाराज, मैं दूर देश से व्यापार करने आया हूँ. रास्ते में मेरा सबसे कीमती हीरा कहीं खो गया है. मुझे शक है कि मेरे ही नौकरों में से किसी ने उसे चुरा लिया है, लेकिन मेरे पास कोई सबूत नहीं है. कृपया मेरी सहायता करें.' राजा ने व्यापारी के चारों नौकरों को दरबार में बुलवाया. चारों ने एक साथ कहा, 'महाराज, हमने कोई चोरी नहीं की.'

दरबार के लोग सोचने लगे कि बिना सबूत के चोर को कैसे पकड़ा जाएगा. लेकिन राजा शांत बैठे रहे. कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने अपने मंत्री से चार एक जैसी लकड़ियाँ मँगवाईं. फिर उन्होंने हर नौकर को एक-एक लकड़ी देते हुए कहा, 'ये जादुई लकड़ियाँ हैं. जिसने चोरी की होगी, उसकी लकड़ी कल सुबह तक दो अंगुल लंबी हो जाएगी. तुम सब इन्हें अपने-अपने कमरे में लेकर जाओ और सुबह दरबार में लेकर आना.'

चारों नौकर लकड़ियाँ लेकर चले गए.

असल में वे लकड़ियाँ बिल्कुल साधारण थीं. उनमें कोई जादू नहीं था. लेकिन राजा जानते थे कि दोषी व्यक्ति डर के कारण कोई न कोई गलती ज़रूर करेगा.

रात भर तीनों ईमानदार नौकर आराम से सो गए. उन्हें किसी बात का डर नहीं था. लेकिन चौथा नौकर, जिसने सचमुच हीरा चुराया था, बहुत घबरा गया. उसने सोचा, 'अगर मेरी लकड़ी सच में दो अंगुल लंबी हो गई तो मैं पकड़ा जाऊँगा.'

डर के मारे उसने अपनी लकड़ी के दो अंगुल काट दिए ताकि अगर वह बढ़े भी, तो पहले जैसी ही दिखाई दे. अगली सुबह सभी नौकर अपनी-अपनी लकड़ियाँ लेकर दरबार में पहुँचे. राजा ने एक-एक लकड़ी को ध्यान से देखा. तीनों लकड़ियाँ बराबर थीं, लेकिन चौथे नौकर की लकड़ी सबसे छोटी थी.

राजा मुस्कुराए और बोले, 'चोर यही है. नौकर घबरा गया और बोला, 'महाराज, आपने कैसे पहचान लिया?'

राजा ने कहा, 'इन लकड़ियों में कोई जादू नहीं था. मैंने केवल तुम्हारी बुद्धि और डर की परीक्षा ली थी. ईमानदार व्यक्ति को डर नहीं होता, इसलिए उसने लकड़ी जैसी थी वैसी ही रखी. लेकिन तुम डर गए और खुद ही अपनी लकड़ी काट बैठे. यही तुम्हारी सबसे बड़ी गलती थी.'

यह सुनते ही नौकर ने सिर झुका लिया. उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और छिपाया हुआ हीरा व्यापारी को लौटा दिया.

व्यापारी ने खुशी-खुशी अपना हीरा वापस ले लिया. उसने राजा को धन्यवाद देते हुए कहा, 'महाराज, आपकी सूझ-बूझ ने वह काम कर दिखाया जो ताकत और सख्ती भी नहीं कर सकती थी.'

राजा ने नौकर से कहा, 'गलती करना बुरा है, लेकिन अपनी गलती स्वीकार करके उसे सुधारना एक अच्छी शुरुआत है. याद रखो, ईमानदारी से कमाया हुआ छोटा धन भी चोरी के बड़े खजाने से अधिक मूल्यवान होता है.'

उस दिन के बाद पूरे राज्य में राजा की बुद्धिमानी की चर्चा होने लगी. लोग अपने बच्चों को यह कहानी सुनाकर बताते कि कठिन से कठिन समस्या का समाधान धैर्य, समझदारी और सही सोच से निकाला जा सकता है.

सीख

सूझ-बूझ, धैर्य और बुद्धिमानी से बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है. साथ ही, झूठ और चोरी करने वाला व्यक्ति अंततः अपने ही डर के कारण पकड़ा जाता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. पेड़ का आकार अलग है, 2. मछली का रंग अलग है, 3. मछली की आंख अलग है, 4. केकड़े की जगह [illegible] है, 5. सीप का रंग अलग है, 6. [illegible] अलग है, 7. जहाज पर झंडा है/नहीं है, 8. [illegible] अलग है, 9. [illegible] अलग है, 10

भूल भुलैया

बूझो तो जानें

- 1.ऐसी कौन-सी चीज़ है,
जिसके पास चेहरा और दो हाथ होते हैं,
लेकिन पैर नहीं होते?
उत्तर: घड़ी
- चार पैर हैं मेरे,
फिर भी मैं चल नहीं पाता.
लोग मेरे ऊपर बैठते हैं,
पर मैं कुछ नहीं कह पाता.
उत्तर: कुर्सी
- हरी थी, हरी है,
राजा के बाग में खड़ी है.
बताओ वह क्या है?
उत्तर: पेड़
- मैं खुद गीला होता हूँ,
फिर भी सबको सुखाता हूँ.
बताओ मैं कौन हूँ?
उत्तर: तौलिया
- न पैर हैं, न पंख हैं,
फिर भी आसमान में उड़ता हूँ.
उत्तर: बादल
- एक पैर पर खड़ी रहती,
बारिश में काम आती.
उत्तर: छतरी
- जितना निकालो उतना बढ़ता जाए,
बताओ वह क्या है?
उत्तर: गड्ढा
- . काला हूँ पर कौआ नहीं,
लंबा हूँ पर साँप नहीं.
बारिश में मैं काम आता हूँ.
उत्तर: छाता
- मुँह नहीं फिर भी बोलती हूँ,
कान नहीं फिर भी सुनती हूँ.
उत्तर: गूंज (आवाज़ की प्रतिध्वनि)
- सफेद घर में काला बच्चा,
बच्चे को पढ़ाए सारा जग.
उत्तर: किताब पर लिखी स्याही

जानकारी

दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान- अंटार्कटिका

जब भी रेगिस्तान का नाम आता है, तो लोगों के मन में रेत के विशाल मैदानों की तस्वीर उभरती है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान अंटार्कटिका है, न कि सहारा? इसका कारण यह है कि रेगिस्तान की पहचान केवल रेत से नहीं, बल्कि बहुत कम वर्षा होने से होती है.

- अंटार्कटिका का क्षेत्रफल लगभग 1.4 करोड़ वर्ग किलोमीटर है. यहाँ पूरे वर्ष बहुत कम वर्षा होती है, इसलिए इसे ध्रुवीय रेगिस्तान कहा जाता है. इस महाद्वीप का लगभग 98% हिस्सा बर्फ की मोटी चादर से ढका हुआ है.
- यह पृथ्वी का सबसे ठंडा, सबसे शुष्क और सबसे तेज़ हवाओं वाला महाद्वीप है. यहाँ का तापमान सर्दियों में -80एष्ट से भी नीचे पहुँच सकता है. इतनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद यहाँ पेंगुइन, सील और कई समुद्री पक्षी पाए जाते हैं.
- वैज्ञानिक अंटार्कटिका में जलवायु परिवर्तन, बर्फ और पर्यावरण पर लगातार शोध करते रहते हैं. यह महाद्वीप हमें पृथ्वी के भविष्य और बदलते मौसम को समझने में महत्वपूर्ण जानकारी देता है.
- अंटार्कटिका दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान है.
- यहाँ पृथ्वी का लगभग 70% मीठा पानी बर्फ के रूप में जमा है.
- यहाँ कोई स्थायी मानव आबादी नहीं रहती, केवल वैज्ञानिक शोध के लिए आते हैं.

कविता

नन्हे कदम

नन्हे-नन्हे कदम हमारे,
सपने हैं आसमान के तारे.

सुबह उठें हम जल्दी-जल्दी,
नई सीख लें हर दिन मिलकर.

फूलों जैसी हँसी खिलाएँ,
सबके चेहरे खुश कर जाएँ.

मेहनत करना रोज़ सीखें,
सच्चाई की राह पर चलें.

पंछी जैसे उड़ते जाएँ,
अपने सपने पूरे कर जाएँ.

माता-पिता का मान बढ़ाएँ,
अच्छे बच्चे कहलाएँ.

हंसी-ठिठोली

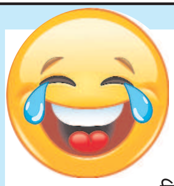

- टीचर - बताओ, सबसे ज्यादा नशा किस चीज में होता है?
छात्र - किताबों में मैडम.
टीचर - कैसे?
छात्र - खोलते ही नींद आने लगती है.
- पापा - बेटा, रिजल्ट कैसा आया?
बेटा - पापा, एक अच्छी खबर और एक बुरी खबर है.
पापा - अच्छी खबर बताओ.
बेटा - अच्छी खबर ये है कि मैं पास नहीं हुआ!
- पत्नी - मैं मोटी लग रही हूँ क्या?
पति - नहीं तो!
पत्नी - सच बोल रहे हो?
पति - हाँ, झूठ बोलने की हिम्मत नहीं है.
- दोस्त - तू इतना परेशान क्यों है?
दूसरा - मोबाइल गिर गया था.
दोस्त - टूट गया क्या?
दूसरा - नहीं, बस सेल्फी में मेरा चेहरा खराब आ गया.
- मास्टर जी - बताओ आलस क्या होता है?
छात्र - कल बताऊँगा सर.
मास्टर जी - क्यों?
छात्र - आज आलस आ रहा है.
- डॉक्टर - आपको क्या बीमारी है?
मरीज - जब मैं बोलता हूँ तो कोई सुनता नहीं. डॉक्टर - अगला मरीज भेजो!
- दोस्त - भाई तू इतना खुश क्यों है?
दूसरा - आज मेरी पत्नी ने मुझे बोलने दिया. दोस्त - क्या कहा?
दूसरा - कुछ नहीं, बस बोलने दिया.

जानिए गुलाब के फूल के बारे में रोचक तथ्य

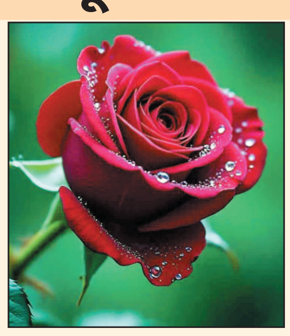

गुलाब को फूलों का राजा कहा जाता है. इसकी सुंदरता, खुशबू और आकर्षक रंगों के कारण यह दुनिया के सबसे लोकप्रिय फूलों में शामिल है.

- गुलाब की हजारों प्रजातियाँ पाई जाती हैं. दुनिया भर में गुलाब के लगभग 30,000 से अधिक प्रकार मौजूद हैं, जिनके रंग और आकार अलग-अलग होते हैं.
- लाल गुलाब प्रेम का प्रतीक माना जाता है. वहीं सफेद गुलाब शांति और पवित्रता, पीला गुलाब मित्रता और गुलाबी गुलाब सम्मान व प्रशंसा का प्रतीक माना जाता है.
- गुलाब का उपयोग केवल सजावट के लिए नहीं होता. इससे गुलाब जल, इत्र और कई सौंदर्य उत्पाद बनाए जाते हैं.
- गुलाब की खेती हजारों वर्षों से की जा रही है. प्राचीन समय में भी लोग गुलाब का उपयोग खुशबू और सजावट के लिए करते थे.
- दुनिया का सबसे महंगा गुलाब 'जूलियट रोज'माना जाता है. इसे तैयार करने में कई वर्षों का समय लगा था.
- गुलाब पर्यावरण के लिए भी उपयोगी है. इसके फूल मधुमक्खियों और अन्य कीटों को आकर्षित करते हैं, जो परागण में सहायता करते हैं.
- गुलाब का पौधा कई वर्षों तक जीवित रह सकता है. सही देखभाल मिलने पर यह लंबे समय तक फूल देता रहता है.

बिंदु मिलाओ

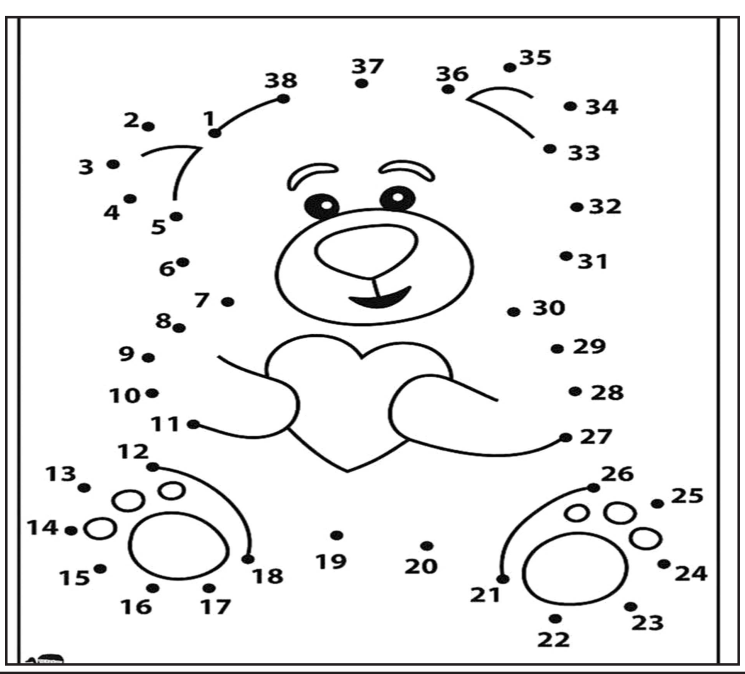

रंग भरो

प्रेरक प्रसंग

शाही गरिमा, शिक्षा और समाज सेवा की प्रेरणादायक : राजमाता गायत्री देवी

राजमाता गायत्री देवी भारत के इतिहास की सबसे सम्मानित और लोकप्रिय राजघरानों की महिलाओं में से एक थीं. उन्हें केवल उनकी सुंदरता के कारण ही नहीं, बल्कि उनकी सादगी, शिक्षा के प्रति समर्पण, समाज सेवा और राजनीतिक योगदान के लिए भी याद किया जाता है. वे जयपुर राजघराने की महारानी थीं और उन्होंने अपने जीवन से यह साबित किया कि सच्ची महानता केवल शाही परिवार में जन्म लेने से नहीं, बल्कि समाज के लिए किए गए कार्यों से मिलती है.

गायत्री देवी का जन्म 23 मई 1919 को लंदन में हुआ था. उनके पिता महाराजा जितेंद्र नारायण बंगाल के कूचबिहार राज्य के शासक थे और उनकी माता महारानी इंदिरा राजे बड़ौदा के शाही परिवार से थीं. बचपन से ही उन्हें उत्कृष्ट शिक्षा मिली. उन्होंने भारत, इंग्लैंड और स्विट्ज़रलैंड के प्रतिष्ठित विद्यालयों में पढ़ाई की. वे कई भाषाओं का ज्ञान रखती थीं और घुड़सवारी, निशानेबाजी तथा खेलों में भी विशेष रुचि रखती थीं. वर्ष 1940 में उनका विवाह जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय से हुआ. विवाह के बाद वे जयपुर की महारानी बनीं. उस समय राजस्थान के अधिकांश हिस्सों में महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक भागीदारी बहुत सीमित थी. गायत्री देवी ने इस स्थिति को बदलने का संकल्प लिया और महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किए.

शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है. उन्होंने वर्ष 1943 में जयपुर में महारानी गायत्री देवी गर्ल्स' पब्लिक स्कूल की स्थापना की. उस समय समाज में बहुत-सी लड़कियों को स्कूल भेजने की परंपरा नहीं थी. राजमाता स्वयं लोगों से मिलकर उन्हें अपनी बेटियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित करती थीं. धीरे-धीरे यह विद्यालय देश के सबसे प्रतिष्ठित बालिका विद्यालयों में शामिल हो गया. आज भी यह संस्थान हजारों छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है. राजमाता गायत्री देवी ने केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि समाज सेवा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए. वे महिलाओं के स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और गरीब परिवारों की सहायता के लिए अनेक सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़ी रहीं. उनका मानना था कि किसी भी समाज की प्रगति महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर निर्भर करती है. वे सादगीपूर्ण जीवन जीती थीं और आम लोगों से सहजता से मिलती थीं, जिसके कारण वे जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय थीं.राजनीति में भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**